

14/06/2019 वकील प्रार्थीगण उपस्थित। प्रार्थीगण की ओर से वकील प्रार्थी ने प्रकरण को अर्जेन्ट नेचर का बताते हुए प्रार्थना पत्र वास्तु अर्जेन्ट सुनवाई पेश किया जिस पर वकील प्रार्थीगण को सुना गया। अप्रार्थीगण संख्या 01 से 13 के नोरिस पूर्व में शामिल हो चुके हैं बावजूद नोरिस शामिल के अप्रार्थी संख्या 01 से 11 अनुपस्थित अतः इनके विरुद्ध एकपक्षीय कार्यवाही की जाती है। वकील प्रार्थी की एकपक्षीय बहस सुनी गई जिसमें कथन किया कि मौजा सूची के खसरा न. 857/2 खसरा 16 वीधा 18 बिस्वा प्रार्थी व अप्रार्थी सं. 1 से 11 की सहवितेशरी की भूमि हैं जिसमें मोठे पर हिलानुसार बंधवाण किया हुआ है प्रार्थी ने लाखोरु की लागत से भूमि को व्यक्तित किया है और उस पर कीवार खड़ी की है उक्त भूमि को अप्रार्थीगण बेचान करने की धमकी दे रहे हैं। प्रार्थी ने बंधवाण व स्याई निषेधाज्ञा का वाद पेश किया है अस्याई निषेधाज्ञा के प्रार्थना पत्र में तीन सिदन्तो पर गौर किया जाना होता है प्रथम दृष्टया मामला प्रार्थी के पक्ष में है क्योंकि प्रार्थी उक्त भूमि का रेकर्ड रखते हैं तथा प्रार्थी ने बंधवाण व स्याई निषेधाज्ञा का वाद पेश किया है, अप्रार्थी उक्त भूमि का बेचान करता है तो वाद बाहुल्यता बहेगी और वाद का उद्देश्य

समाप्त हो जाएगा। सुविधा का सन्तुलन
प्राथीगण के पक्ष में है क्योंकि दोशने
वाद उक्त श्रुति का बेचान होता है तो
प्राथीगण को अपूरणीय शक्ति होगी जिस
कारण से सुविधा का सन्तुलन प्राथीगण
के पक्ष में है। यदि मूल वाद के निर्णय
तक अस्थायी निष्पत्ति जारी नहीं की
जाती है तो इसके अभाव में अप्राथीगण
उक्त श्रुति का बेचान कर सकते हैं
जिससे प्राथीगण को अपूरणीय शक्ति होगी
वकील प्रथी के द्वारा न्यायिक दृष्टान्त
R.R.D 2010 पेज 96 उक्त प्रकार पर
चरण होता है।

वकील प्रथी की बहल श्रुति
एवं पत्रावली का अवलोकन करने के लिए
न्यायिक दृष्टान्त के आधार पर
प्राथीगण का प्रार्थना पत्र स्वीकार कर
अप्रथी सं. 01 से 11 को वाक्य दिया
जाता है कि प्रार्थना पत्र में वर्णित अप्राथी
के रिकॉर्ड की मूल वाद के निर्णय तक
अस्थायी बनाई रखी जावे।

पत्रावली के मूल श्रुति बेकर
नम्बर से कम हो मूल वाद से
सन्तुलन हो।


सहायक कलेक्टर
(S.D.O.) रानी